



सुखसुख सुख मेखरनौ पूरयायल २
घाघरमस्मयाघचर्म जयमुकु
टविश्ववज्र २ शक्तमराड अर्द्ध चंद्रच
कं ॥ सव्यकरवज्रवामेघराठ २ भौर
वकातिआलिढपद ॥ जयं श्रीदिभु
जसम्बरविभुवनव्यापिता २ अर्द्धसि

द्विमहामुद्रासिद्धि ॥ ॐ ॥ रागतोडि
वाराहिव्येस्थितविदलसंरोसादिन
करमंडलमध्यस्थिता २ रक्तधर्मोदया
चापियातान्देवी मुकुटकेशादिगवरा
॥ ॥ प्रणामाभिवाद्यति श्रीवज्रयोगि
नी अनुत्तरबोधिप्रदायनी दिभु

जसक मुखचिनि लोचना लोहितवर्णा
प्रज्वलिता २ विभुवन व्यापिनी रहिनेक
रतिधारि ॥ मज पुरित कपालधारि ॥
चक्रिकुराडल कारिठ धारी ॥ हाथ्ये लोच
कवि भूषिनी २ चरसो नौ पुर रहिनेक
रतिये ॥ मेखलान रसिरावि भूषिता ॥

विश्वजननी परमगुह्य श्वर भव भयता
रणी विरे श्वरी २ सहजानन्द श्वरूपिनी
देवी ॥ कृद्विसिद्धि चरणा प्रसासयनी ॥
॥ ॐ ॥ रागनाट ॥ सकल जगत संसा
र रूपो हं २ सर्व रूप धरे हर्ता कर्ता हं ॥ ॐ
देवी विभुवन सकु अवलं २ जगतव

अः
शिरसं
जातः
२८

द्रमयसर्वमिदंरूपोहं॥ अहंबुद्धि
अहंसिद्धिस्थावरजंगमोहंमोहं२अहं
स्त्रीअहंपुरुषनपुंसकोहं॥०॥राग
हेराजेल॥हंकारसंजातइन्द्रनीलसम
पुतिदेहा२प्रोज्वालाज्वलसमज्वालाऊँ
समाकृता॥ ऊँ॥जयंतुअचलअने

गमुरुति॥खड्गपाशकंधारि२जगतना
थजगतपारित॥महाक्रोधराया॥॥
अयनिनिहितवामजाल॥घोरवर्णात्रि
लोचना२केकराक्षसभवभयंकरअ
खिलविघ्नहंता॥॥ब्रह्महरिहरमय
वराणाशनदर्वदहनशुवीरा॥॥इष्टा

निर्मल गयने

निधीडित सय की रणा विप्रहंता ॥ वि
विधिरत्ना भरणा भूषीता दिव्य रत्न मौ
री २ जगत बांधित सर्व सम्यक् सिद्धि
वल फल दायक ॥ ॐ ॥ राग वर्णादि
निर्मल गयने तु सोहित अग्ने २ विमुह
विलो यन समर सुहवे ॥ ॐ ॥ भावयि

रेश्मी योगा म्य रवीरा २ योगिनी जारे क
रुणे नाच्यी ॥ ॥ जाकि नीमरा डल च
के पश्यिया ॥ ॥ वजी घोरि वेत्तारि च
राजति २ सिंधि रानी व्याधि रानी ज मुख
उलुकी नी ॥ जाकि नी धिपि नी च उरि कं ॥ ॐ
यो मनी २ सयर समर भय वंधन मोचयि ०

मधुमेरु

ॐ नमः श्रीपद्मनृत्येश्वराय ॥ ॥
एगमेरवि ॥ मधुमेरु महामाणिक
नक राजिते पूर्वविदेहजम्बूद्वीपं २
अपरगोशयनिउत्तरकरुभुवने पं
चवर्णापंचजितव्यापियारे ॥ ॥
तमेपंचवुद्धं विश्वश्रीजितविश्व

हितविश्वभूतपंचमुरुति २ अष्टद्वी
पानलावहृतिजितमानसाहरंतुभय
तिमिरघनघोररूपं ॥ ॥ जातवे
दत्यसेयाउपद्वीपएउपद्वीपरीजा
तुधाने २ स्वसनलाउपद्वीपचउवि
दिगंभुवने त्राउपद्वीपश्रीखंडपश्च

रुधिरयाचि यत्तत्र अष्टादश कुंविलो २ अवर

॥ दिरदरणाचि येन लूरो उदीचि

येसायकंचक्रा ॥ मणि कुलनिधिनि

पिलवेदयंति ॥ ॥ गुरुचरणत्रिव

रसाभाक्तेपरिभावना ॥ मनकुसुमउ

दकपरिसंफुलि पूजा ॥ प्रणावप

रिभावस्थि तत्रपरि पूजिता भव

जलनिधिसंसारसेतुभूतं ॥ ॥

रागभैरवि ॥ निर्माणादिचतुषष्टि

दलसरोरुहमध्येगतकादिवृत्तनाद

रूपि २ समीरपेरितललितोर्ध्वगामि

निनरनिरसूत्रोपमज्वलनादरूपि

॥ ॥ ॐ नमामिदेवी श्रीवज्रविशसि

निर्माणादि

२

निविभयहरणंरवसमज्ञानदेवी २
ओडियानेपूर्णगिरिकामरूपश्रीह
तसुविश्वद्वमण्डलनृत्ययंति ॥ ॥
वसुदत्तसरोरुहवारधर्मचक्रयोडश
दलसंभोगचक्रं २ द्वात्रिंशतदलक
मलमहासुखचक्रहंकाररूपश्रीहे

रुक्ताथं ॥ ॥ दहयिजिनविद्या
दित्रितयाभेदिनिश्रावविमृतधार
यनादरूपि २ पीठादिदशभूमिसुग
तपूजनिजिनज्ञानदायनिवीरेश्वरी
॥ ॥ दर्पणाप्रतिविमुजलनचंडो
पमअहिनिशि सुमरंतेवज्रदेवी २

गोकुल

जन्मजन्मनोरुतं जु पायशरणा दुर्ग
तिनाशनमोक्षप्रदाता ॥ ॐ ॥
एगगंधाभोवि ॥ गोकुलदहनपंचज्ञान
स्वरूप २ पंचामृतसंपंचशालिपूज
या ॥ ॐ ॥ तुल्यदेवीवाणीयात्रिभुव
नवीर २ विमललोपंकजसमयानं

शरयोनि

दे ॥ ॥ वीरवीरेश्वरसहजानंदे २ क
लंकमलासनहृदयानंदे ॥ ॥ पंच
बुद्धपंचकंधस्वरूपे २ देवासुरनरप्रभु
दितहृदया ॥ ॥ ओं आः हूं ह्रीं खूं शो
धनकरिते २ उमरुघराध्वनिविरमा
नंदे ॥ ॐ ॥ एगकर्णादि ॥ वदयो

गिति देवात्रिभुवन व्यापिनी २ विष्णु
माराडुष्ट दर्पा विनाशिनी ॥ ॐ ॥
नमामि २ श्रीवज्रवाराहि २ ऋद्धिसि
द्धिदायनि जगत जननि ॥ ॥ पूर्वदिग
स्थितरक्तवर्णांगी २ ईशानेयामिनिदे
विनीलवदनि ॥ ॥ वायुव्यमोहिनि

देवि श्वेतवर्णाभा २ पश्चिमे संचारि
णिदेवी पीतवर्णांगी ॥ ॥ ते ऋत्प
संचासिनि देवी हरितवर्णाभा २ दहिने
वशिष्ठा देवी धूमवर्णांगी ॥ ॥ च
तुर्भुज एका नना पंचमुद्राभरणा २ स्व
स्वकीज संभवानवरसदिगं वरा ॥ ॥ ॐ ॥

ॐ
आ
हं
क
रु
५

एणभैरवि ॥ ॐ आः हं फट अनंतरे स्वाहा.
मंत्र उच्चारणारे २ पूजा पूजक पूज्यभावे.
तत्त्वस्वरूपवलिभावे ॥ ॐ ॥ ख ख.
खादि २ वलि पूरारे घघ घाटय २ वि.
घृहरे २ पंचामृतारसपंचशालिरे पंच
ज्ञानसर्वरीणा ॥ ॥ सर्वयक्षराक्षस

भूतप्रेतरे पिशाचोन्माडापस्मारे २ डा
कडाकेति कुर्भष्टमशाने इदं वलि
गृहंतरे ॥ ॥ समं पारदांतुमांतिरे ॥
सर्वसिद्धिसंपत्तिशांतिरे २ यथैव तथै
व भुजार्थपीवर्थ जिघृथमाति क्रमथ
रे ॥ ॥ दानपतिसर्वकार्यतत्त्वया.

अनिलः ३

सर्वसुखसपदशांतरे २ आसंसारतां
आगतवचने सर्वसिद्धि संपातिवृद्धिरे-
॥ ॐ ॥ रागपथमंजलि ॥ अनिलअ
नलंजलजो भुवमारु मेरुमण्डलच
क्राया २ वज्रपंजर सरजार संपरिभे
दि मेरुमण्डलचक्राया ॥ ॐ ॥

उमरुक्षोरयिया ॥ शुभ्यकरुणा आ
लिंगनहेरुवक्षोरयिया २ वज्रवा
रहि आलिंगनसर्वसुखक्षोरयिया-
॥ ॥ छत्रिसंवीरवीरेश्वरसंजहिं
जहिं तहिं तहिं अष्टमशाने २
अनुहृतसर्वदेववज्र षोडश देवी.

॥ १५७ ॥
मिरांतिय भय न संभावे ॥ ॥ त्रिभुव
न नु स एक राय न भण डो. त्रिभु
वन एक वीरं वीए २ त्रिणि भव
न नव नाटक संप्र शादिरे. फलिं
ग उए का काण ॥ ॥ अहिनिश
सत गुरु वोरन नु रागे ॥ छादिंगे र

अनुत्तर. ७

भाव अभावे २ जन्म मरण भय वं
धन छादिंगे. भय मोरु अति रसं
हावे ॥ ॥ ॥ राग ललित ॥ अनुत्तर
तथ ता वंकार संभावे रत्न रूप चिंति
त विचित्र कलशं २ ॐ आ. हंकार
व गुप्त तमु एक सप्त संज्ञे धित

ज्ञानमृन्मयं ॥ ५ ॥ चन्द्रामृत
रसबोधिफलस्यैकं सर्वजिनव्या
पिनसहजकलशं २ जगत्सलशो
धकभूयता करुणाभावआसंसा
रमाशान्तविरक्षरूपं ॥ ॥ वज्रपर
मानुमयगंधां वुसंयुक्तशंखसंशो

धितपंचपीयूषं २ हंकारमंत्रपुष्पा
संबद्धवज्रसंस्थापितविपाकक
लशं ॥ ॥ घटमभ्यंतरतत्परूप
भावआरुष्यमंदाकिनिजलरू
पं २ स्मृतिताधारणा देवताचक्रं
ज्ञानसत्त्वमानीयहृदीजकलशं

रक्तवर्णः ८

॥ पाद्यादिआचमनदानपुण्य
सारसमयसात्वप्रबोधाविमलक
लशं २ महारागडवीभूयबोधिवि
त्तरूपसमयसात्वज्ञानसात्वएकी
भूतं ॥ ॥ एणनाद ॥ रक्तवदन
त्रिणिशिलोयनसुंदरी २ अष्टादश

भुजप्रहरणकिरणो ॥ ॐ ॥ तुल्य
देविवारुणिमहामामकिदेवि २
जगत्प्रमोदोमयनासुराणे ॥ ॥
आगमवेदपुराणावरवानेश्योग
धर्मदीक्षागुरुउपदेशो ॥ ॥ पंचव
द्रत्वरूपकहेतुह्ये २ सयारयो ८

ॐ
ॐ
ॐ

गिनि मा ऊ हे रु वं तु हे रु व ॥ ॥

सतगुरुवरणाशित्यंगतंधरीया

भनयि श्री वा क वज्र मुग खरुपि ॥

ॐ ॥ राग भेद वि ॥ नमो हं कार रु

पधरु २ ख च वि सत्त्व उन्ना धरु ॥ ॐ

ते ना हूं हूं ते ना हूं २ ते ना ते ने हूं हूं हूं

त्रिचक्र - १०

॥ ॥ दस अलिङ्गन योग धरु २ व

जुघंठ मुद्रा धरु ॥ ॥ धवल मु सं

षुन दे ह धरु २ शर द सु सो हिये चं

ड मरु ॥ ॥ मा या दे ही न जं गु २

सो हिये करुणा सत्त्व महं ॥ ॐ ॥

राग शृ गार मार शि ॥ त्रि चक्र वि



शशि मण्डल मारु स्थिति आनंद मरु
तिधरा २ वज्र वा एहि आलिंगन सम्य
ए नाना रश्मि म हो ज्वला ॥ ३ ॥
तेनाहं हं तेनाहं हं २ तेनातेतेहं हं हं
॥ नीलवर्णा चतुर्वक्त्र प्रतिमाव
त्रिनेत्रा परमानंद मरु तिधरा २ विभ

वज्र अर्द्ध चन्द्र जय मकुंधरा हाडा भ
रण सुशोभिना ॥ ॥ वज्र घण्टा गज च
र्म उ मरु खड्ग विरमानंद मरु ति
धरा २ कर्तिकपाल परशुपाश त्रिशू
ल वस्त्र शिल्प धरा व्याघ्र चर्म कटिव्य
स्थिता ॥ ॥ दिगां विदिगां काकाश्या

दियमडाकिनीदेवी सहजानंदमु
 रुतिधरा २ नमामि २ श्रीचक्रसम्ब
 ए सतगुरुचरणआरुधिता ॥ १ ॥
 एगमेकार ॥ मायाजालविमुसह
 शशी १ २ मोहमायादर्पछादिरे
 माया मोह ॥ ३ ॥ समसारअसा २

एगदेषमोहछादिरेनिरआशा
 ॥ ॥ अनमिषनयनेदृढ कहचिये २
 उन्ममरीचियदुष्टरपुण्यदु ॥ ॥
 सहजसंभावे उदनागतधरीया २
 एतोपरमसंवासरुवे ॥ अवधु
 वउदयचउपायपुशादा २ गावं

१२ त्रिभुवनज्योतिन

तिनिईःखभवचक्रतरिवो ॐ ॥
रागगंधाभैरवि ॥ त्रिभुवनज्वलित
गुरुतिअनुरायनविनयवर्ति ॥ क
नाचेवजुसत्त्वपरमेश्वरीरावर्ति
॥ ॥ राशि सप्तहस्त्रकिरादशसूर्य
सहस्रवर्ति ॥ ॥ बहुविधधरूप

शंकाभरण

रविशशिअनुरायनसत्त्ववर्ति ॐ
रागअहेडि ॥ हाशभरणाक्रियायि
रेसम्बरधारिकंवाछलिरेभेशा २
तुल्यवारंतेमाराडयामुशाने मकुट
केशादिगम्भरा ॥ क ॥ ररे मोरुस
म्बरया समरमुंदरिमोरुकोला २

हमवि राहिनि वज्र वा राहि फेद म
हिया मो रुशाला ॥ ॥ शालिं भोयने
वो सुहमयने कर्पूर भवयितं वो ला २
गगना नीला वारा वंदिरे जो दा मेरु
मराउल भवरीणा ॥ ॥ त्रियं धउ व
इहें का दिंगे सम्वर पयि शयि शुभ

महारा २ हमवि राहिनि वज्र वा राहि
नुसविनु वेष मि अंधारा ॥ ॥ गा वं
ति लीला वज्र ज्वलिया उरे सतगुरु
चरण आराधे २ समया नंदे फलि
गोर मराउल सम्वर वज्र वा राहि ॥ ॥
राग कर्णादि ॥ त्रिहं डा राफय योगि

निदेहकवादि २ कमलकुलिश
घण्टकरहनजिवायि ॥ ३ ॥ योगि
निनुल्लविनुषतहनजिवायि २ तो
रमुहचुंवियारे कमलसंपिवायि
॥ ॥ क्षेपहयोगिनिलेपनजायि २
मीणाकुलवहियारे ओडियानस

हंवीजसंभव ७५

माने ॥ ॥ सासुहघोरघोरकुंचिये
तारे २ चन्द्रसूर्यइयिपक्षे नभराडो
॥ ॥ भनीयेगोडारिहमकुंडुरुवीरा २
नारयनारीमारे उभयनउवीरा ॥ ॥
रागकामोद ॥ हंवीजसंभवखसम
देहा नवरसवनिशालक्षणावश २

द्वादशभुजा वेदवदना द्वादशवर्ण
लोकनेत्रं ॥ कुं ॥ नमामि श्रीचित्र
केश्वरं मारभय भवभयहरणं ॥
॥ चतुर्विंशतिपीठेश्वरं छत्रीसं
वीरं वीरेश्वरं २ चतुर्वक्त्रदक्षिणी
परिहृता देवि संपूट प्रज्ज्वलितस्थि

ता ॥ ॥ प्रज्ञासंपूट आलिकालि
पदाक्रांता भक्ति सुन्दरा २ द्वादशदे
वीरकभावा नमामि श्रीचक्रसं
रा ॥ ॥ सतगुरुचरणो शिष्यगत
धरीया भक्तियोगी तथी कुलिशा २
दानपतिरे मनोहर्ष सद्यमराउल

वज्रयोगिनी.

आणविना ॥ ॐ ॥ रागमाशि ॥ वज्र
जागिनिहेरुवराया २ त्रिभुवनना
थदेहिमेप्राणो ॥ ॐ ॥ पिक्कियरे
महारसमहासुखदेदिया २ वज्रदे
वीस्फलयि अनुन्नरजाने ॥ ॐ ॥ उद्द
नारीविदलकमलसंयोगे २ देहि

श्रीहेवज्रनैरात्मा.

विशायिपवनसंभेदयि ॥ ॐ ॥ भुज
यिरेपंचमहासुखदेदिया २ पंच
शिरसवीजवाहणी ॥ ॐ ॥ सतगुरु
चरणप्रसादेचतुर्थाभिषेक २ प्रा
णेश्वरीसंसारसमुद्रा ॥ ॐ ॥ एण
कर्णादि ॥ श्रीहेवज्रनैरात्मादेवीत्रि

भुवननाथ २ पंचजिन व्यापित पंच
वर्णदेहा ॥ क ॥ नमामि २ श्रीगोपु
च्छागचैत्य २ हेरु क श्रीगुल्लेश्वरी व
जुजोगिनि श्रुन्यता ॥ ॥ पूर्वादिगस्थि
तभोरवनीलवर्णा २ दहिनपात्रवा
शि वामविदुधरा ॥ ॥ घस्मरीचोरी

योगिनिदेवी २ गावन्ति लीलावजु
हंकारसंवजा ॥ ॐ ॥ गगणमक
रि ॥ हूं हूं देहधरु संसारतरु २ दंश
आलिंगवयोगधरु ॥ क ॥ हेवजु
गुल्लतेना हूं हूं २ तेना हूं हूं तेना तते
हूं हूं ॥ ॥ सुरनरवंदित चरणधरु २

आ
आ
ॐ
ॐ

७५

कुसुमविलेपनदेहधरु ॥ भाव
विमकटविशेषगुणकूटयिश्न
मोहं २ श्रीहेवजुतुल्यगुणप्रेषयि
॥ ॐ ॥ एणग्वडशी ॥ चक्रिकु
शलेकशिठरुचकमेखलभूषि
नग्रीवेरुडनरशिरमाला २ शिल्य

चक्रिकचक्रैरेयाभस्मविभूषित
गगणकतोडिवंधुरिलाया ॥ ५ ॥
प्रभुशशिहेरुवमेमोरुकोराया
युगेनाथभीसम्बरराया ॥ वज्र
कण्ठकहाथधरीया कण्ठकीया
उरवडांगे २ संप्रटयोगिनिकम

नाचयिमारनिरवारुवे ॥ जिमप
रयारेदेहपुसरे ॥ जिनजनीनिच
जुजोगिनि ॥ ॥ जयंजयंहाडाभ
रणसुशोभा ॥ कशतिकपालख
चांगधारी ॥ ॥ जयंजयंरौडमशा
ननीरे ॥ ग्रीवरुडनशिरमाला ॥

॥ ॥ जयंशाषहजगतसंसार ॥
प्रणामामिअद्यसंवादलि ॥ ॥
रणपंचम ॥ जयंवादलिहेरु
वधरयि ॥ सयरसुगसुरजगतउ
धारि ॥ ॥ ते भगवतिपाडकम
लमहिमराडलनोपुररुणांरुणां

कारणं २ हाडमालाआभरणविभू
षितघण्टउच्चा ला २ त्रिणित्रिणी
त्रिनयंतित्रिणीनयना ॥ ॥ कर्त्ति
खपा गीवरुडनरशिरमाला २
कुक्षिरवदांगवरमकुटकेशा ॥
॥ शिरससिंदुराकज्जलसुफ

द्वा२ कलुषैकपूर्णतामुलमुखसा
 रे॥ ॥ भक्तियुक्तवज्रा वाह
 लिदासा२ श्री वज्रदेवी प्रशादश्री
 हेरुवपाया॥ ॥ ॥ रागधनाश्री
 सवाक्तामहासुखदेदिया॥ च
 उआनंददेहा२ त्रिभुवनस्फुल

सर्वांग

यिमहासुखराया॥ चन्द्रसूर्यदुयिमे
रिया॥ ॐ ॥ नपापरिरागानौपूरारि
शात्रिभुवनसकस्वरूपी २ सर्वविक
ल्पविध्वंशनीदेवी॥ अनुत्तरज्ञानवर
दायनी॥ ॥ अमिताभमण्डलवन्दि
यारेथिति॥ कल्याणलमिवरूपधारी २

करतिकपातखटांगधारिप्रज्ञाज्ञान
वरदेहा॥ ॥ दिगम्बरासुकुटकेशी
चक्रीकुराडलकरिठधारी २ रुचकमे
खरा॥ पायरधारीशीव्येरुदनरशिरमा
ला॥ ॥ सर्वतथागतजननीदेवी॥ वि
रहितभावअभाव २ श्रीवज्रयोगिनी

प्रज्वलितहंकारः

चरणाशित्यंगतः गावन्ति समरसवज्ञा
॥ ॐ ॥ रागकामोड ॥ प्रज्वलि
तहंकारोद्भवमुरुति ॥ इन्द्रनीलाब्ज
समप्रतिदेहा २ विश्वाब्जस्थितश्च
करणां ॥ रत्नमुकुटकोक्षावयं ॥ ॐ ॥
नमामि श्रीप्रचण्डवीरं भवाविसि

सुतरणां २ विश्वनाथत्रिभुवनव्यापि
त ॥ वेदारिब्धं सनकरणां ॥ अनन्त
जानुस्थितत्रिभुवनवीरं ॥ स्वतरेण
खड्गदधानं २ वामतर्जनिहृदिपाश
धर ॥ भवारिनासनबंधकरणां ॥ ना
नारत्नहारनौपूराकटिमेखराभूषि

तदेहा २ इष्टाकरारभिषमवदनं वि
 भुवनराया प्रचण्डवीरं ॥ विरा
 धियति सर्वभयहरणं ॥ प्रेतपिशाचा
 दिशांतनमनशा २ सुरनरयक्षादि
 वन्दितया दं ॥ सर्वसिद्धि मोक्षफल
 दं ॥ ॥ ॥ रागभंगारमारथी ॥

विभुज एकमुखवरकवर्णात्रिनेत्रा २
 मुकुटकेशदिगम्बरा ॥ ५ ॥ तेनाहं
 हं ॥ तेनाहं २ तेनातेतेहंहं ॥ ॥ वामक
 शेटक सहिन करति २ लण्ड आभरणा सु
 शोभिता ॥ ॥ सूर्यमण्डलमाश्रितान्द
 वमुरुति २ वज्रमंडितविभूषिता ॥

विभुज एकमुख

हंकारसंज्ञातः

शातगुरुचरणाशित्येगातधरा २ वज्र
वाराहितं जुपाय सरणा ॥ ॐ ॥ राग
जावलि ॥ हंकारसंज्ञातशुक्लदेहा २
दिभुजसकास्याचिनेत्रं ॥ ॐ ॥ तेना
हं हं तेनाहं २ तेनातेतेहं हं हं च
किङ्कराडलकरिठशोभा २ रुचकमे